# राष्ट्रीय संगोष्ठी

**30 सितम्बर – 01 अक्टूबर 2016**

## पंजीयन प्रपत्र

नाम _____

पद _____

संस्था _____

_____

शोधपत्र का शीर्षक _____

_____

### : पंजीयन :

पंजीयन शुल्क : विद्यार्थी/शोधार्थी रू. 500/-,
शिक्षक एवं अन्य रू. 700/-
प्रतिभागी अपने रहने/ठहरने की व्यवस्था स्वयं करें।

### : स्वागत समिति :

श्री मोहन प्रियाचार्य
श्री कमल चिलाना
श्री ललित भगत
श्री राजकुमार मदान
डॉ. सुशील कुमार भगत
श्री सुरेश कटारिया

श्री विश्व मोहन मिश्रा
एवं समस्त प्राध्यापक हिन्दी विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय

संत साहित्य और महामति प्राणनाथ : समसामयिक संदर्भ

# राष्ट्रीय संगोष्ठी

30 सितम्बर – 01 अक्टूबर 2016

प्रति,

_____

_____

_____

_____

बुक-पोस्ट


प्रेषक :

**डॉ. विनोद शर्मा**
संगोष्ठी संयोजक
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर-302004
मो. : 9950997599 ई-मेल : vinoddr68@gmail.com



Panami Printers : 9314642925

# संत साहित्य और महामति प्राणनाथ : समसामयिक संदर्भ

# राष्ट्रीय संगोष्ठी

**30 सितम्बर – 01 अक्टूबर 2016**

## महामति प्राणनाथ

( सन् 1618-1694 )

**: आयोजक :**

श्री प्राणनाथ मिशन
दिल्ली

श्री प्रणामी पंचायत
जयपुर

हिन्दी विभाग
राज. विश्वविद्यालय

# संत साहित्य और महामति प्राणनाथ : समसामयिक संदर्भ

भारतीय मनीषा स्वाभाविक रूप से आपसी भाईचारे और विश्व शांति के उद्देश्य को पाने में ही अपनी सार्थकता मानती रही है। यह जययात्रा सदियों से चलती रही है। इस सदाशयता और उदार दृष्टि को जब कभी संकीर्णताओं ने पंथ और सम्प्रदाय के नाम पर, मतवाद और शास्त्रीयता के नाम पर बांटना शुरू किया तो धीरे–धीरे ऐसे छोटे–मोटे अँतरे घर करते गए जिनसे धर्म, आचार और अनुशासन का एक व्यापक और वृहत्तर वितान जो स्वभावतः सबको अपनी छाँव दे रहा था, वह बिखरता चला गया। यहां से हमारे उस अलिखित इतिहास की घड़ियाँ धीरे–धीरे तिरोहित होती चली गई और हम अपनी धरोहर के प्रति आश्वस्त होने के बजाय आरोपित मूल्यों और अवधारणाओं को मानने को बाध्य हो गए।

ऐसे ही समय में एक सोते समाज को जगाने–जागनी का युगान्तरकारी मंत्र और परावाणी (तारतम) का अनोखा संदेश देने के लिए महामति श्री प्राणनाथ जी जैसे युगपुरूष का अभ्युदय हुआ, जिन्होंने एक साथ कई मोर्चों को नेतृत्व दिया। वे धर्मान्ध राजशाही से दो टूक परिसंवाद करने वाले निर्भीक प्रवक्ता, एक जुझारू रणनेता, शास्त्रों के नए व्याख्याता, सर्व धर्म समभाव के अन्यतम प्रचारक थे। यही नहीं गुजरात में जन्म लेने के बावजूद वे राष्ट्रवाणी हिन्दी के प्रखर हिमायती थे। उनके निर्माण में, अवश्य ही उनके गुरु श्री देवचन्द्र जी की अनन्य भूमिका रही। जिन्होंने उन्हें धर्म, कर्म, आचार, शास्त्र और पंथ का ज्ञान प्रदान करने के साथ–साथ इन सबसे बंधे रहने के बावजूद एक उन्मुक्त और निर्ग्रन्थ, निर्बन्ध और निर्वर्ण समाज और संसार बनाने की स्वतन्त्रता प्रदान की। उनके तारतम (जो कि तारतम्य का तद्भव रूप है) मंत्र ने दो विरोधी विचार धाराओं (वेद और कतेब) को साथ मिलाकर अद्भुत सामंजस्य स्थापित करते हुए मानव मात्र के उत्थान और उत्कर्ष के निमित्त एक अभिनव प्रस्थान दिया है। यह अभिनव प्रस्थान निर्मित करने के लिए श्री प्राणनाथ जी को सभी भौतिक सुख सुविधाओं की बलि देकर कंटकाकीर्ण पथ पर चलना पड़ा था।

महामति प्राणनाथ (1618–1694 ई., विक्रम संवत 1675–1751) के जन्म का नाम मेहराज ठाकुर था। वे केशव ठाकुर और धनबाई के पुत्र थे। अपनी विलक्षण प्रतिभा के कारण अपनी किशोरावस्था तक पहुँचते–पहुँचते वे आध्यात्मिक ज्ञान में पारंगत हो गए थे। केवल बारह वर्ष की उम्र में अपने बड़े भाई गोवर्धन ठाकुर के साथ सद्गुरु देवचन्द्र की शरण में आते ही, गुरु को यह अभिज्ञान हो गया कि मेहराज के पार्थिव देह में कोई महान् अलौकिक आवेश विराज रहा है। सद्गुरु के सान्निध्य में धर्म और आध्यात्म के सारे सूत्र संकेत, इनके परवर्ती जीवन और लोक साधना का मंत्र बन गया। मेहराज ने शास्त्र साधना, आत्मसंवाद और शास्त्रों के साक्ष्य से यह जान लिया अपने आराध्य के निकट जाने के लिए कुल, शील और शास्त्र का अहंकार छोड़कर, संपूर्ण समर्पण की आवश्यकता होती है।

यही कारण है कि वंश परम्परा से सीधे संबंध न होने के बावजूद मेहराज अपने सद्गुरु की सद्इच्छाओं और आकांक्षाओं के सर्वथा सुयोग्य वाहन बन कर उनकी नाद परम्परा के समर्थ अधिकारी बने। उन्हें योग्य पद पर आसीन होते हुए भी गुरु सेवा के प्रति अपने अकारण उत्साह के लिए अपने ही भाई द्वारा प्रताड़ना मिली और जामराजा द्वारा कारायंत्रणा झेलनी पड़ी। लेकिन यह यातना उनकी साधना की अनिवार्य प्रयोगशाला बन गई जिसने उनके तपस्वी और मनस्वी व्यक्तित्व को फौलादी बना दिया। यही कारण है कि महामति ने अपनी वाणी श्री तारतम सागर अथवा श्री कुलजम स्वरूप में विभिन्न और विधर्मी जान पड़ने वाले धर्मग्रंथों और शास्त्रों को जोड़कर नई एवं बहुस्वीकृत व्याख्या की।

यह 18758 चौपाईयों का विशाल ग्रंथ जिसकी आरंभिक चौपाइयाँ कभी जामनगर की काराघातना से आरंभ हुई थी – उनके धामगमन (1694ई.) तक विभिन्न चरणों में, विभिन्न स्थलों पर अवतरित हुई। इस वाणी समुच्चय के विशिष्ट चौदह ग्रंथ हैं – श्री रास, प्रकाश, षटऋतु, कलश, सनंध, किरंतन, खुलासा, खिलवत, परिक्रमा, सागर, सिनगार, सिन्धी, मारफत सागर और कयामतनामा।

उनका आध्यात्मिक अभियान सामाजिक नवोत्थान के साथ एक ऐसे विश्व और विश्व धर्म संदेश से जुड़ा था – जिसकी आकांक्षा सदियों से की जा रही थी। इन सभी दायित्वों और भूमिकाओं का निर्वाह जिस कौशल, संकल्प व संघर्ष से सम्पन्न होता चला गया – वह सचमुच अद्भुत और अनूठा था। इस अभियान में अनेकानेक अवरोध, कठिनाई व कष्ट झेलते हुए उन्हें देवचन्द्र जी जैसे परम भागवत दीप्त सतगुरु, बुंदेलकेसरी छत्रसाल, स्वामी लालदासजी जैसे समर्पित शिष्य और सदाशई 'सुन्दरसाथ समाज' मिलता है। कष्टपूर्ण आनंद यात्रा का यह जागतिक रूप ही उनकी आध्यात्मिक यात्रा का जीवंत दस्तावेज है। उन्होंने भाषा, वर्ण, जाति, वर्ग, धर्म, सत्ता और व्यवस्था की जमकर खबर ली। सभी धर्मों की तात्विक और सैद्धान्तिक एकता को निर्भीक रूप से संसार के समक्ष रखने वाले महामति प्राणनाथ का जीवन वृत्त भारतीय इतिहास का स्वर्ण पृष्ठ है। सत्रहवीं शताब्दी के इस स्वर्णिम पृष्ठ को समझे बिना भारतीय संत मनीषा को समझ पाना बहुत ही कठिन है।

हिन्दी विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, श्री प्राणनाथ मिशन, दिल्ली एवं श्री प्रणामी पंचायत, जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस राष्ट्रीय संगोष्ठी का मुख्य उद्देश्य महामति प्राणनाथ के धार्मिक, सामाजिक एवं साहित्यिक सौन्दर्य के विभिन्न पक्षों के महत्व को रेखांकित करना है।

## प्रस्तावित विषय

- महामति प्राणनाथ साहित्य में सहिष्णुता व सद्भाव
- महामति प्राणनाथ साहित्य में स्त्री चिन्तन के स्वर
- संत–साहित्य में महामति प्राणनाथ का योगदान
- महामति प्राणनाथ साहित्य में दलित उत्थान
- युवा दृष्टि में महामति प्राणनाथ
- राष्ट्रीय चेतना के ध्वजवाहक – महामति प्राणनाथ
- महामति प्राणनाथ की भाषा दृष्टि
- महामति प्राणनाथ की काव्य कला
- महामति प्राणनाथ का जीवन दर्शन
- प्रणामी धर्म के परवर्ती संत एवं उनका साहित्य